# सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन

# आंदोलन के उदय के कारण

- **सुधार की आवश्यकता क्यों?**
- तत्कालीन हिंदू धर्म एवं समाज निष्क्रिय एवं शक्तिहिन।
- जाति प्रथा ने समाज के निम्न वर्ग के प्रति उच्च वर्गों का अनुचित व्यवहार एवं छुआछूत की गंभीर समस्या खड़ी कर दी।
- समाज उच्च एवं निम्न वर्गों में विभक्त थ।
- समाज का निचला तबका सामाजिक सम्मान और आर्थिक सुविधा के लिए इसाई धर्म को स्वीकार करने लगा था
- हिंदू धर्म एवं समाज की रक्षा के लिए सुधार की आवश्यकता थी

- उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलन एक ओर औपनिवेशिक सांस्कृतिक प्रभुत्व एवं भारतीय संस्कृति के औपनिवेशिक संस्कृति से पराजित होने की चेतना तो वहीं दूसरी ओर परंपरागत भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था के कमजोर पक्षों के विरुद्ध एक सामाजिक सांस्कृतिक बौद्धिक संघर्ष था
- संस्कृति का प्रभाव और विदेशी शक्ति द्वारा पराजित होने की चेतना के चलते लोगों में नई जागृति पैदा हुई।
- भारतीय सामाजिक ढांचे और सांस्कृतिक दुर्बलता की वजह से भारत को उपनिवेश में बदल दिया।
- बुद्धिजीवी भरतीय द्वारा अपने समाज की शक्ति तथा कमजोरी को जाना और उसकी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास खोजने लगे

# **ब्रह्म समाज**

- स्थापना- 1828 को राजा राम मोहन राय द्वारा की गई।
- आधार – तर्क शक्ति और वेद, उपनिषद्
- **उद्देश्य** ।

1. राजा मोहन राय की मान्यताओं के अनुसार हिंदू धर्म में सुधार लाना।
2. हिंदू धर्म को स्वच्छ बनाना।
3. एकेश्वरवाद की शिक्षा देना।
4. मानवीय प्रतिष्ठा पर जोर।
5. मूर्ति पूजा का विरोध।
6. सती प्रथा जैसी आमानवीय प्रथा की आलोचना करना।

# **प्रार्थना समाज**

- स्थापना- **1867 मुंबई**
- संस्थापक- **आत्माराम पांडुरंग।**
- **उद्देश्य**-

1. जाति प्रथा का विरोध।
2. पुरोहितों के आधिपत्य की आलोचना।
3. पुरुषों एवं स्त्रियों की विवाह की आयु को बढ़ाना।
4. विधवा पुनर्विवाह, अंतरजातीय विवाह।
5. स्त्री शिक्षा को बढ़ावा

# रामकृष्ण मिशन

- स्थापना- 1897
- संस्थापक- स्वामी विवेकानंद।
- रामकृष्ण मठ की स्थापना 1897 में कोलकाता के पास बारा नगर में हुई तत्पश्चात बेल्लूर, कलकत्ता में मिशन की स्थापना हुई।

**उद्देश्य-**

1. सभी धर्मों की बुनियादी एकता पर जोर तथा विभिन्न धार्मिक बातों में संकुचित दृष्टिकोण की निंदा।
2. मानवतावादी राहत कार्य तथा समाज कार्य किया।
3. देश के विभिन्न भागों में स्कूलों अस्पतालों दवाखाना अनाथालय आदि खोलकर सामाजिक सेवा।
4. इनका मुख्य उददेश्य व्यक्ति की मुक्ति नहीं बल्कि समाज कल्याण और समाज सेवा पर था

- स्वामी विवेकानंद ने मूर्ति पूजा बहूदेवबाद आदि का समर्थन किया।
- उनके अनुसार ईश्वर साकार एवं निराकार दोनों है एवं उसकी अनुभूति विभिन्न प्रतीकों के द्वारा की जा सकती है।
- स्वामी विवेकानंद को 19वीं शताब्दी के नव हिंदू जागरण का प्रतीक माना जाता है
- सुभाष चंद्र बोस ने विवेकानंद को आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता कहा है

# **आर्य समाज**

स्थापना-1875 बंबई , 1877 में मुख्यालय लाहौर

संस्थापक-दयानंद सरस्वती

बचपन का नाम **मूल शंकर**।

**स्वामी पूर्णानंद** ने उन्हें दयानंद सरस्वती का नाम दिया।

इनके गुरु का नाम **स्वामी विरजानंद**

- स्वामी दयानंद सरस्वती ने **वेदों की ओर लौटो का** नारा दिया।
- छुआछूत जाति व्यवस्था का विरोध किया परंतु **वर्ण व्यवस्था** का समर्थन किया
- 1874 में दयानंद ने **सत्यार्थ प्रकाश** का प्रकाशन किया।
- दयानंद सरस्वती ने भारतीयों को धर्म परिवर्तन से बचाने के लिए शुद्धि आंदोलन चलाया।
- पहले व्यक्ति थे जिन्होंने **स्वराज शब्द** का प्रयोग किया।

- पहले व्यक्ति जिन्होंने बताया कि **विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए और भारत में बनी हुई व स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना** चाहिए।
- यह पहले व्यक्ति थे उन्होंने **हिंदी को राष्ट्रभाषा** के रूप में स्वीकार किया।
- 1882 में **गौ रक्षा** समिति बनाई।
- **वैलेंटाइन शिरोल** ने आर्य समाज को भारतीय अशांति का जन्मदाता कहा है

# उद्देश्य

- जनता में आत्म सम्मान तथा स्वावलंबन की भावना जगाना। इससे राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिला।
- हिंदुओं के धर्म परिवर्तन को रोकना।
- मूर्ति पूजा कर्मकांड का विरोध।
- जाति प्रथा और ब्राह्मणों द्वारा प्रचलित हिंदू धर्म के विरोधी।
- वास्तविक जगत में रहे मनुष्यों की समस्याओं की ओर ध्यान दिया तथा परंपरागत विश्वास से लोगों का ध्यान हटाया।
- पश्चिमी विज्ञान के अध्ययन का समर्थन किया

# थियोसोफिकल सोसायटी

- स्थापना- 1875, अमेरिका (न्यूयार्क)
- संस्थापक-रूसी महिला HP **Blavastsky** और एक अमेरिकी सैनिक अफसर कर्नल **MS Olcott।**
- 1879 में थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापक भारत पहुंचे।
- 1882 में मद्रास के पास **अड्यार** में सोसायटी का मुख्यालय स्थापित किया।
- **1907** में **एनी बेसेंट** थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष बनी और आंदोलन काफी लोकप्रिय बनाया।

- **<u>उद्देश्य</u>**
- प्राचीन हिंदू धर्म के लोगों के आत्मविश्वास को जगाना और बढ़ाना।
- धर्म को समाजसेवा का आधार बनाना।
- बाल विवाह एवं जात पात का विरोध किया।
- विधवाओ की दशा सुधारने का प्रयास किया।
- लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना।
- नव युवकों की शिक्षा का प्रयास किया।
- एनी बेसेंट ने सबसे पहले बनारस में 1898 में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की इसी कॉलेज को मदन मोहन मालवीय ने 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया

# मुस्लिम सुधार आंदोलन

- मुसलमानों में नवजागरण हिंदुओं की अपेक्षा धीरे-धीरे आया।
- **कारण**-
- मुस्लिम हमेशा अपने आप को भारत के शासक शासक समझते रहे खासकर अंग्रेजो के खिलाफ जिन्होंने राजनीतिक सत्ता उनसे छीन ली।
- 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने जो मुस्लिम विरोधी नीति अपनाई उसे मुसलमानों में अंग्रेज विरोधी भावनाएँ पनपी।
- मुस्लिम भारत में अंग्रेजों द्वारा लाई गई नई संस्कृति और शिक्षा के सँपर्क से बच रहे और पुरातन पंथी इस्लाम के साथ जुड़े रहे।
- 19वीं शताब्दी के मध्य तक उच्च वर्ग के मुसलमानों ने पश्चिमी शिक्षा एवं संस्कृति के संपर्क से बचने की कोशिश ही की।

- अब्दुल लतीफ- बंगाल में मुस्लिम पुनर्जागरण का पिता।
- 1863 में कोलकाता में **मोहम्मडन लिटरेरी सोसायटी** की स्थापना

# सैयद अहमद खान एवं अलीगढ़ आंदोलन

- सैयद अहमद खान आधुनिक वैज्ञानिक विचारों से काफी प्रभावित हो जीवन भर इस्लाम के साथ उनका तालमेल कराने का प्रयत्न करते रहे।
- इस्लाम की एकमात्र प्रामाणिक पुस्तक कुरान है।
- मुसलमानों का धार्मिक और सामाजिक जीवन आधुनिक पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति को अपनाकर ही सुधारा जा सकता है।
- अपने जीवन के दो प्रमुख लक्ष्य बनाए-
- अंग्रेजी सरकार और मुसलमानों के संबंध को ठीक करना।
- मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा का प्रचार करना।

- आधुनिक शिक्षा का प्रचार जीवन पर्यंत उनका प्रथम उद्देश्य रहा।
- 1875 में अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल स्कूल की स्थापन।

 1878 में यह कॉलेज बना 1920 में अलीगढ़ मुस्लि विश्वविद्यालयय में परिवर्तित हो गया

- इसकी स्थापना पश्चिमी विज्ञान और संस्कृति का प्रचार करने के लिए की गई।

- सर सैयद अहमद खान शुरू में धार्मिक सहि्णुता के पक्के समर्थक थे।
- उनका विश्वास था कि सभी धर्मों में एक बुनियादी एकता मौजूद है।
- धर्म व्यक्ति का अपना निजी मामला है और भी व्यक्तिक संबंधों में धार्मिक कट्टरता की निंदा करते थे।
- वे सांप्रदायिकता विरोधी थे ।
- हिंदू और मुस्लिम एकता के समर्थक थे।

- सैयद अहमद खान ने कांग्रेस की स्थापना का विरोध किया और उसके विरोध में 1888**यूनाइटेड इंडियन पैट्रियोटिक एसोसिएशन की स्थापना की|**
- अपने विचारों के प्रसार के लिए एक पत्रिका **तहजीब उल अखलाक** निकाली

- सैयद अहमद खान सामाजिक सुधार के कार्य भी किए।
- मुसलमानों से मध्यकालीन रीति रिवाज तथा विचार व कर्म की पद्धति को छोड़ने का आग्रह किया।
- समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने का प्रयास।
- पर्दा प्रथा छोड़ने तथा स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार का समर्थन किया बहू विवाह प्रथा तथा मामूली बातों पर तलाक के रिवाज की निंदा की।

- **<u>देवबंद आंदोलन-1866</u>**
- उलेमा **<u>मोहम्मद कासिम ननोत्वी तथा रशीद अहमद गंगोही</u>** के नेतृत्व में देवबंद सहारनपुर में एक स्कूल खोला गया।
- यह एक पुनरुद्धार आंदोलन था।
- अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्य संस्कृति पूर्ण रूप से वर्जित थी।
-

- **<u>उद्देश्य</u>** –
- मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना।
- विदेशी शासकों के विरुद्ध जेहाद की भावना को जीवित रखना।
- मुस्लिम संप्रदाय के लिए धार्मिक नेता प्रशिक्षित करना।